उम्मीद के सुमन खिलने दो

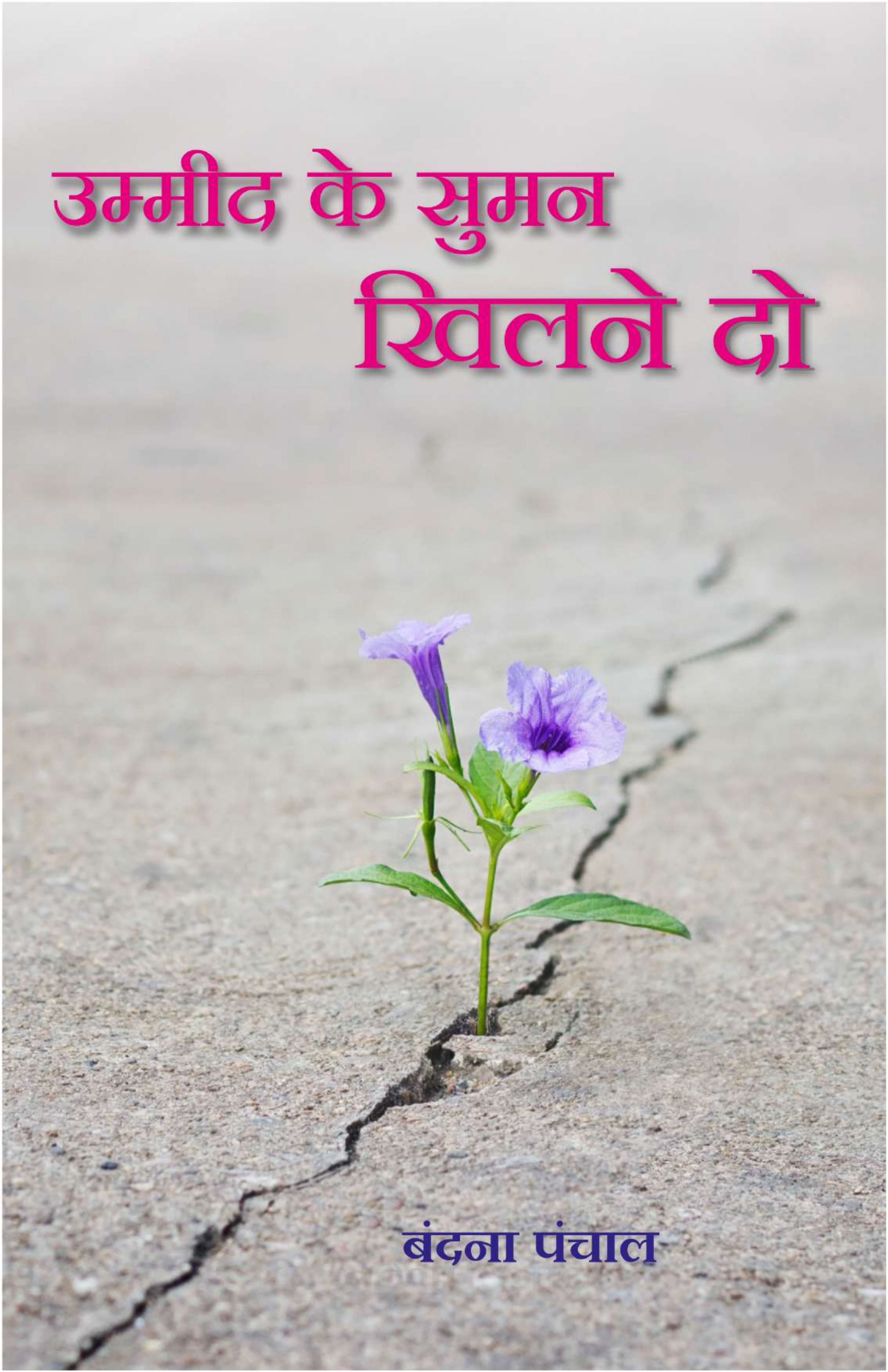

बंदना पंचाल

उम्मीद के सुमन खिलने दो

काव्य संग्रह

बंदना पंचाल

प्रकाशकः

बंदना पंचाल

10/3, मंगलम फ्लैट,आनंद फ्लैट के सामने,

बापूनगर, अहमदाबाद - 380024

ईमेलः panchalbandanadcis@gmail.com

दूरभाषः 7016658542

गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी
के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

UMMID KE SUMAN KHILANE DO (KAVYA SANGRAH)

© **BANADA PANCHAL**

प्रथम संस्करण : **2022**

प्रतियाँ : **500**

मूल्य : **Rs. 150 /-**

प्रकाशक:
बंदना पंचाल
10/3, मंगलम फ्लैट, आनंद फ्लैट के सामने,
बापूनगर, अहमदाबाद - 380024
ईमेल: **panchalbandanadcis@gmail.com**
दूरभाष: **7016658542**

Typesetting & Priters :
फागुन ग्राफिक्स एन्ड प्रिन्टर्स
48, पूर्वीनगर, घोडासर केनाल, भाडुआत नगर के पास,
घोडासर, अहमदाबाद - **380 050**
(M) 98255 04661
Email : fagungraphics@gmail.com

स्व. कमलेश पंचाल

इस काव्य संग्रह का एक-एक शब्द आपको समर्पित है।
मेरी प्रेरणा के रूप में आप सदा मेरे साथ हैं।

अच्छी कविता एक चमत्कार है...

इच्छा तो होती है कि इन काव्यों के बारे में बहुत कुछ लिखूँ. लेकिन कुछ दिनों से ऐसी जगह –गुजरात से सुदूर –नागपुर से भी कुछ दूरी पर आए वर्धा में बैठा हूँ। यहाँ गाँधी यूनिवर्सिटी है, और तीन दिनों की वैश्विक डायो स्पोरा पर गोष्ठी चल रही है। १० सत्र में देश विदेश के विद्वान और संशोधक अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं, इस माहोल में बंदना पंचाल का काव्य संग्रह भी पढ़ा। ये रचनाओं का अपना संसार कवयित्री ने किस प्रकार व्यक्त किया होगा मुझे कौतुक भी है। सच में कविता – अच्छी कविता–एक चमत्कार है। यहाँ उम्मीद के सुमन के खिलने की चाह है, मनुष्य इच्छा पीड़ा और महत्वाकांक्षा से बंधा हुआ जीवंत अंदाज़ है। उसे व्यक्त – अव्यक्त के रास्ते पर निकल कर खोज करना ये नियति है। इस नियति के मेघ. धनुष के सात नहीं एक अधिक आठवाँ रंग भी है। यहाँ कवयित्री ने ऐसे जीवन रंगों की तलाश का कविता के माध्यम से प्रयास किया है। हम चाहेंगे कि इस रास्ते पर उन्हें रम्य सफलता प्राप्त हो। इस काव्य संग्रह के लिए बहुत बहुत बधाई।

– डॉ. विष्णु पंड्या

पूर्व अध्यक्ष, गुजरात साहित्य अकादमी

भाव, भाषा एवं लय की त्रिवेणी

उम्मीद के सुमन खिलने दो बंदना पंचाल की प्रथम कृति है प्रथम रचना का आह्लाद रचनाकार के लिए अनूठा होता है और वह स्वयं मंत्रमुग्ध हो जाता हैं । । बंदना पंचाल से मेरा परिचय बहुत पुराना नहीं है और बहुत नया भी नहीं है । पिछले अरसे में महिला काव्य मंच की काव्य गोष्ठियों में इनकी रचनाएँ सुनने का अवसर मिला । इसके अतिरिक्त भी अनेक समारोहों में इनकी प्रभावक प्रस्तुति को नजरंदाज नहीं किया जा सकता । मुझे इनके व्यक्तित्व में सबसे विलक्षण बात यह लगती है कि इनके मुँह से शब्द बाद में निकल हैं, आँखें पहले बोलती हैं । संग्रह के प्रारंभ में ही आत्मखोज के साथ – साथ एकता में अखंडता की कल्पना की गई है

एक सुर हो सभी का एक ताल हो,
गीत बने ऐसा जो बेमिसाल हो ।

जिसकी राग सुनते ही झूमे सभी,
आओ कोई ऐसा संगीत हम तलाशें ।

इसके आगे कवयित्री ने ज़िम्मेदारी का बोझ उठाने के लिए प्रेरित किया है क्योंकि उसका कोई विकल्प नहीं है । कलम रुक नहीं सकती, कलम झुक नहीं सकती । कलम न ही रूठ सकती है, न ही टूट सकती है । उसे ज़िम्मेदारियों का वहन करना ही होगा । वह समय की पर्याय है, चेतना है, पहचान है । इसी कलम से प्रेमचंद ने गोदान लिखा और अज्ञेय ने लिखा तो नए-नए उपमान अवतरित हुए । यहाँ बंदना की कलम से उम्मीद के सुमन खिले हैं । उम्मीद ही व्यक्ति को जीवंत और गतिशील रखती है । निराशा तो संभव को भी असंभव बना देती है । 'स्वीकार है हिंदी' को भी हम इसी श्रेणी में रखेंगे जहाँ हिंदी भाषा

सबको जोड़ने की आशा के रूप में परिलक्षित होती है । कुछ कवितायें जैसे उडान, संघर्ष अरमान आईना झूठ नहीं बोलता है, अटूट विश्वाश ऐसी रचना हैं जो सोते हुए को जगाती हैं, गिरे हुए को उठाती हैं, रुके हुए को गतिशील होने की सशक्त प्रेरणा देती हैं ।

मैं पुनः बंदना पंचाल के प्रथम काव्य-संग्रह के प्रकाशन पर उन्हें शुभकामना देती हूँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ कि इसी प्रकार वे उम्मीद के सुमन खिलाती रहें और हमें गौरवान्वित करती रहें ।

- डॉ. शांति शर्मा
सेवा निवृत्त उपाचार्य,
राजस्थान हिंदी हायर सेकेंडरी स्कूल

प्रेरित करती कविताएँ

बंदना पंचाल का पहला काव्य- संग्रह **'उम्मीद के सुमन खिलने दो'** प्रकाशित हुआ है । मैं इसके लिए उन्हें अनंत शुभकामनाएँ देती हूँ। अपार प्रसन्नता के साथ काव्य-संग्रह पढ़ते हुए मुझे उनकी कविताओं में समाज के अनेक रंग दिखाई दिए आधुनिक युग में एक संघर्षशील नारी की व्यथा कथा सपने, उम्मीद, जिम्मेदारियाँ, निराशा और संघर्ष पर दृष्टिपात करती उनकी कविताएँ हमारे अंतर्मन को छू जाती हैं । इनकी कविताओं में नारी मन की व्यथा-कथा के साथ-साथ समाज की विडंबनाओं पर भी प्रकाश डाला गया है ।

नारी हो या पुरुष यदि वह अपने कर्मपथ पर संघर्ष करते हुए आगे बढ़े तो निश्चित रूप से रेगिस्तान में फूल खिलाया जा सकता है । जीवन में घोर निराशा व्याप्त हो तब भी संघर्ष कर आगे बढ़ने की ओर इनकी कवितायें प्रेरित करती हैं । साथ ही साथ आगे बढ़ने का संदेश देती हैं। आज की नारी किसी भी मामले में कमज़ोर नहीं हैं । वह हर परिस्थिति में स्वयं को ढालकर जीवन पथ पर आगे बढ़ती है ।

अत्याचार का सामना वह रणचंडी बनकर कर सकती है समाज में जो कुछ घटित होता है, उसका सच्चा बयान करना हर कलम का दायित्व है । यह कलम की ज़िम्मेदारी है कि सच्चाई का बयान करे, झूठ — फरेब का नहीं । 'तू कलम है' कविता में इसे बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है । समाज में जो बाह्य आडंबर करते हैं, उनका भी खुलकर विरोध करते हैं । आईना झूठ नहीं बोलता है इसका प्रमाण है। आज के महानगरीय जीवन में सबसे ज़्यादा प्रभाव आपसी रिश्तों पर पड़ा है। रिश्तों की ऊष्मा जैसे खत्म हो गई है । बंदना जी की कवितायें स्नेह का अलाव जलाकर रिश्तों को जिंदा रखने का भाव जगाती है । इसी के

साथ-साथ देशभक्ति और ग्रामीणांचल के कुछ चित्र भी मिलते हैं। शिल्पपक्ष की बात करें तो बंदना जी की कविताओं में लयात्मकता और गेयता के गुण हैं। भाषा सरल और सहज है लेकिन अंतर्मन को छू जाती है। भाषा अभिव्यक्ति में कहीं में आडंबर नहीं है। अपने मन के भावों को सच्चाई से बयान करती है। बंदना पंचाल की कविताएँ संघर्षशील नारी के समक्ष आने वाली चुनौतियों का सामना करने वाली कर्मरत निडर नारी के मन के भावों की अभिव्यक्ति है। जीवन.पथ में आने वाले संघर्ष का सामनाकर मंज़िल की ओर आगे बढ़ने का संदेश देने वाली उनकी कवितायें समाज का आईना हैं।

पुनश्चः शुभकामनाएँ।

सहोदरी

- डॉ. उर्मिला विश्वकर्मा
विभाग अध्यक्ष,
दिल्ली पब्लिक स्कूल, गांधीनगर

प्राक्कथन

विश्व साहित्य में सर्वाधिक और सर्वश्रेष्ठ साहित्य यदि किसी भाषा में है तो वो हिन्दी भाषा है।यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है। ये और बात है कि एक लम्बे अरसे की गुलामी ने हमारे मस्तिष्क को कुंद कर दिया है। हमारे मन-मस्तिष्क पर यूरोप का भूत सवार हो गया है। इसलिए हम अपने श्रेष्ठ और स्तरीय साहित्य की तुलना पाश्चात्य साहित्य से करके उसे श्रेष्ठता प्रदान करते हैं। लेकिन यह सर्वथा गलत है अनुचित है। हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठता, स्तरीयता और गुणवत्ता को चुनौती नहीं दी जा सकती है। हिन्दी साहित्य के इस श्रेष्ठता और स्तरीयता में छंद-बद्ध पद्य रचना का अपना विशेष आकर्षण है। इसके आकर्षण से कोई भी सहृदय व्यक्ति बच नहीं पाया है। जो भी इसके सम्पर्क में एक बार आता है वह इसके सम्मोहन से स्वयं को निकाल नहीं पाता है। छंद-बद्ध पद्य रचना की गेयता उसकी लय का आकर्षण बेमिसाल है। हिन्दी साहित्य की इस विद्या में एक से बढकर एक सशक्त हस्ताक्षरों की रचनाएँ इसका ज्वलंत उदाहरण हैं। हिन्दी साहित्य में सबसे अधिक साहित्य इसी विद्या में पाया जाता है। यही वो विद्या है जो व्यक्ति के हृदयतल तक बहुत शीघ्रता से पहुँच कर उसे सम्मोहित करने में सक्षम है।

भारत के पश्चिमांचल में, इस गुर्जर भूमि पर हिन्दी साहित्य की इस विद्या में एक नवोदित लेकिन सशक्त हस्ताक्षर के रूप में श्रीमती वन्दना पंचाल का नाम उभरकर सामने आ रहा है। इस उदीयमान कवयित्री ने अपनी कलम से आम बोलचाल की भाषा में बहुत सटीक और मार्मिक दृश्य प्रस्तुत किये हैं। नये बिम्ब और प्रतीकों के माध्यम से बड़ी शालीनता और कुशलता से बेहतरीन रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। छोटी-छोटी लेकिन दिल को छू लेने वाली रचनाओं में पूरा एक दृश्य प्रस्तुत करने में वन्दना पंचाल की कलम सफल रही है। कयी एक रचनाएँ तो बेहद स्तरीय हैं।

सरल, सहज, आम बोलचाल की भाषा में श्रेष्ठ बिम्ब, प्रतीकों के माध्यम से स्तरीय रचना प्रस्तुत करना बहुत कठिन है। लेकिन इस कठिनता को वन्दना जी ने बड़ी शाइस्तगी के साथ सहज बना दिया है। इनकी रचनाओं में आम ज़िन्दगी के रंग इतस्तत: बिखरे पड़े है। उम्मीद के सुमन खिलने दो यह इनका प्रथम काव्य संग्रह है। और यह निसंकोच कहा जा सकता है कि वन्दना जी का यह पहला संग्रह ही बेहद आकर्षक है। हिन्दी साहित्य में अपनी पहचान और स्थान बनाने में यह पूर्णत: सक्षम है। प्रत्येक रचना में भावों की अभिव्यक्ति बेहद आकर्षक और स्तरीय है।

पुस्तक प्रकाशन के इस पावन पर्व पर आपको अनन्त शुभकामनाएँ।

आप यशस्वी हों और सफलता प्राप्त करें यही ईश्वर से प्रार्थना है।

– विजय तिवारी

संस्थापक एवं अध्यक्ष
साहित्य सेतु परिषद
विश्व हिन्दी साहित्य संस्थान (यूट्यूब चैनल)
http://vtlibrary.com
अहमदाबाद, गुजरात

3 अक्तूबर, 2022
दुर्गा अष्टमी

आत्मकथ्य

'उम्मीद के सुमन खिलने दो' मेरा पहला काव्य संग्रह है । एकल काव्य संग्रह के रूप में मेरी यह पहली पुस्तक है । मैं गुजरात हिंदी साहित्य अकादमी की ह्दय से आभारी हूँ । उन्होंने मेरे काव्य.संग्रह को सहयोग के योग्य समझकर अर्थानुदान प्रदान किया । जिस समय मैं जीवन की कठिनतम स्थितियों से गुजर रही थी उस समय यह अनुदान मेरे लिए किसी पुरस्कार से भी बढ़कर था । अपनी कविताओं को एक पुस्तक के रूप में देखना किसी भी रचनाकार के लिए एक यादगार पल होता है । मैं उस पल के समीप थी और उत्साहित भी । साहित्य के क्षेत्र में अभी मुझे बहुत कुछ सीखना है, समझना है । जिसके लिए मैं आजीवन प्रयासरत रहूँगी । **'उम्मीद के सुमन खिलने दो'** जीवन के कई उतार चढ़ाव संघर्ष और उससे लड़ने के साहस को शब्दों में गूँथने का प्रयास है । इसमें जीवन के कई रंग और अनुभव को संजोने की कोशिश की गई है । **'उम्मीद के सुमन खिलने दो'** निराशा में आशा के दीप जलाने की सीख देता है । अपने जीवन अनुभव को मैंने इस संग्रह में कविता के रूप में स्थान दिया है ।

'उम्मीद के सुमन खिलने दो' और **'फूल खिले हैं रेगिस्तान में'** कविता जीवन की हर स्थिति में उम्मीद जगाये रखने की तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है । 'पैर ही हैं मेरे पर' कविता के शब्द –शब्द को मैंने जिया है । साथ ही कहीं प्रकृति के मनमोहक रंग हैं, कहीं युद्ध की विभीषिका, कहीं रिश्तों में अपनापन है तो कहीं दूरियाँ, कहीं राजभाषा हिंदी का बखान है, कहीं देश के वीर जवानों को सम्मान हैं, कहीं जीने की राह है तो कहीं क्षितिज तक पहुँचने की चाह है, कहीं अपनों के समीप होने का हर्ष है तो कहीं पीड़ा और दर्दभरी आह है । इस काव्य संग्रह में मैंने विशेषत: स्त्रियों के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करने का प्रयास

किया है । उनकी अभिलाषा, संघर्ष, मन:स्थिति पर प्रकाश डाला है । वह प्रत्येक स्थिति में स्वयं को ढालकर अपने लक्ष्य तक पहुँचती है । वह चूल्हा नहीं है, जो सदा जलती रहे, वह तो हवा है, निरंतर बहने वाली हवा । इस काव्य संग्रह में मैंने गाँव की बदलती तस्वीर को भी शब्दों के माध्यम से चित्रित करने का प्रयास किया है और शहरों में बढ़ रहे प्रदूषण का भी उल्लेख लिया है । वर्तमान समय में हम त्योहार मनाने के मूल उद्देश्य को भूलकर मात्र दिखावे को स्थान दे रहे हैं । एक अनोखी दीपावली, एक दशहरा ऐसा भी कविता द्वारा यह बताने की कोशिश की गई है कि पर्व मिलकर मनाये, किसी रोते हुए चेहरे पर मुस्कान लायें । कुल मिलाकर जो कुछ भी मैंने देखा है जिया है अनुभव किया है उसे कविता का रूप दिया है ।

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए मैं अपने जीवनसाथी, सहयोगी और मार्गदर्शक स्व. कमलेश पंचाल की ऋणी हूँ और यह काव्य-संग्रह उन्हें समर्पित करती हूँ । उन्होंने हमेशा मुझे कविता लिखने के लिए प्रेरित किया । यह उनका ही सपना था कि मेरा काव्य संग्रह प्रकाशित हो । इसके लिए वे सदा प्रयासरत रहे । इस काव्य संग्रह का शब्द - शब्द उन्हें समर्पित है । मैं अपने पिता जी श्री संतप्रसाद शर्मा और माता जी श्रीमती माधुरी शर्मा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ कि जीवन के कठिन दौर में भी उन्होंने हमारी शिक्षा को महत्त्व दिया और हर स्थिति में आगे बढ़ना सिखाया । मैं अपने गुरु डॉ.ओमप्रकाश गुप्त और श्री राजेश क्षत्रिय की ऋणी हूँ जिन्होंने हिंदी के प्रति मेरा भाव जागृत किया । साथ ही मैं अपनी दोनों बड़ी बहन श्रीमती उर्मिला विश्वकर्मा और श्रीमती मिथिलेश शर्मा के मार्गदर्शन की आभारी हूँ । मैं अपने जेठ श्री अशोक लुहार की आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन में मेरी हमेशा सहायता की। मैं शर्मा परिवार और पंचाल परिवार के प्रत्येक सदस्य की आभारी हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस पुस्तक के प्रकाशन में मेरी मदद

की । साहित्यकार श्री विजय तिवारी जी के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ । उन्होंने इस प्रकाशन में हर संभव मदद की और मार्गदर्शन किया । साथ ही मैं जहाँ शिक्षक के रूप कार्यरत हूँ वह संस्था शंकुज डिवाइन चाइल्ड इंटरनेशनल स्कूल की ट्रस्टी श्रीमती रुचि चौधरी, आचार्य श्री साजी वी मैथ्यू का आभार व्यक्त करती हूँ । उन्होंने विद्यालय के विभिन्न कार्यक्रम में मुझे नए अवसर प्रदान किये और मेरी लेखनी को सराहा । साथ ही मैं अपने विद्यालय के सभी संयोजक और सहकर्मियों की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और समय-समय पर मेरी हर संभव सहायता की । आप सभी का सहयोग और मार्गदर्शन सदा मुझे मिलता रहे ।

इसी उम्मीद पर अपने शब्दों को विराम देती हूँ । उम्मीद करती हूँ 'उम्मीद के सुमन खिलने दो' पाठकों को पसंद आएगी और मेरे विचार उन तक पहुँच सकेंगे ।

- बंदना पंचाल

10/3, मंगलम् फ्लैट,
आनंद फ्लैट के सामने, बापुनगर
अहमदाबाद - 380024
ईमेल : panchalbandanadcis@gmail.com
दूरभाष : 7016658542

अनुक्रमणिका

❋	उम्मीद के सुमन खिलने दो	१९
❋	चलो तलाशें	२०
❋	तू कलम है	२१
❋	वो अपने हैं मेरे	२२
❋	फूल खिले हैं रेगिस्तान में	२३
❋	मत हो निराश	२४
❋	नववर्ष	२५
❋	कमज़ोर नहीं है नारी	२६
❋	लो झूम के सावन आ गया	२८
❋	सपने	२९
❋	किया है उसने बहुत कमाल	३०
❋	पापा	३२
❋	अलाव	३३
❋	मन मेरा बौरा गया	३४
❋	मेरे पंख	३५
❋	फूल की आत्मकथा	३७
❋	किसान की कहानी	३८
❋	बदल गया मेरा गाँव	३९
❋	एक दशहरा ऐसा भी	४०
❋	मौसम नहीं मल्हार का है	४१
❋	आईना झूठ नहीं बोलता है	४२
❋	एक अनोखी दीपावली	४३
❋	किताबें	४४
❋	चलने लगी हवा पागल	४५
❋	सीमाएँ कुछ कहती हैं	४६
❋	लाल फूल	४७
❋	मेहंदी और महावर	४८

❋	स्वीकार है हिंदी।	४९
❋	मेरा सौ सौ बार प्रणाम है	५०
❋	बचपन की यादें	५२
❋	हार्दिक स्वागत है	५३
❋	स्त्री	५४
❋	अरमान	५५
❋	भोर की बेला	५६
❋	आम इंसान	५७
❋	दूसरा घर	५८
❋	हम उम्र से बड़े हो गए।	५९
❋	तुम हवा हो	६०
❋	इंतजार	६१
❋	नकाब	६२
❋	बेटी के विदा होने के बाद	६४
❋	केंचुल	६६
❋	अगरबत्ती बनाती लडकियाँ	६७
❋	वे लोग (सच्ची घटना पर आधारित)	६८
❋	अटूट विश्वास	६९
❋	हो सके तो मुझे याद दिलाना	७०
❋	मौन	७१
❋	उडान	७२
❋	संघर्ष	७३
❋	प्यासी धरती	७४
❋	मैं परी	७५
❋	तेरे आँचल के साये में	७७
❋	मेरे मन की चिड़िया	७८
❋	युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है	८०

≋ ≋ ≋

उम्मीद के सुमन खिलने

विपदाओं से लड़ने दो, उपवन में आँधी चलने दो,
मंज़िल भी मिल जाएगी, उम्मीद के सुमन खिलने दो ।

ये जीवन है संघर्ष भरा, मुस्कान लिए बस बढ़ना है
फूलों जैसा खिलना है, नदियों जैसा बहना है ।

डगमग करते कदमों को, धीरे -धीरे संभलने दो,
मंज़िल भी मिल जाएगी, उम्मीद के सुमन खिलने दो ।

कंटक -पथ पर कलियों की, चाह कभी भी मत करना
चोट अगर लग जाए तो आह कभी भी मत भरना ।

अलसाई सी आँखों में, फिर से ख्वाब सँवरने दो,
मंज़िल भी मिल जाएगी, उम्मीद के सुमन खिलने दो ।

चलो तलाशें

प्रीत की कोई नयी रीत हम तलाशें
गा सके हर कोई ऐसा गीत हम तलाशें ।

ऊँच -नीच का न कोई भेद भाव हो
गम की धूप की जगह खुशी की छाँव हो ।
न हार हो किसी की, न हो कोई निराश
मिल सके सभी को ऐसी जीत हम तलाशें ।

प्रीत की कोई नई रीत हम तलाशें
गा सके हर कोई ऐसा गीत हम तलाशें ।

एक सुर हो सभी का एक ताल हो
गीत बने ऐसा जो बेमिसाल हो ।
जिसकी राग सुनते ही झूमे सभी
आओ कोई ऐसा संगीत हम तलाशें ।

प्रीत की कोई नई रीत हम तलाशें
गा सके हर कोई ऐसा गीत हम तलाशें ।

पतझार के मौसम का गुल कहलाए
गर्दिश के दिन में भी खुशियाँ लाए ।
दु:ख घड़ी में न बदले कभी
साथ जो निभाए ऐसा मीत हम तलाशें ।

प्रीत की कोई नई रीत हम तलाशें
गा सके हर कोई ऐसा गीत हम तलाशें ।

तू कलम है

जि़म्मेदारियों का बोझ उठाना ही होगा
तू कलम है तुझे अपना फ़र्ज़ निभाना ही होगा ।

स्याही की एक भी बूँद तेरी व्यर्थ नहीं जाए ।
हर कलमकार का तू हथियार कहलाए ।

शोषित वर्ग का सहारा बन जाना ही होगा
तू कलम है तुझे अपना फ़र्ज़ निभाना ही होगा ।

काँपे तुझसे थर-थर अन्याय करने वाले
पर याद रहे कोई सच्चा हिम्मत नहीं हारे ।

जो भी सच है उसे सामने लाना ही होगा
तू कलम है तुझे अपना फ़र्ज़ निभाना ही होगा ।

लिखा प्रेमचंद ने तो गोदान बन गई
अज्ञेय ने चलाया तो नए उपमान बन गई ।

प्रसाद की नारी -सा गुनगुनाना ही होगा ।
तू कलम है तुझे अपना फ़र्ज़ निभाना ही होगा ।

वो अपने हैं मेरे

जीवन में मेरे जो मुसकान लाए,
वो अपने हैं मेरे, नहीं वो पराये ।

हर गम में, खुशी में गले से लगाये,
वो अपने हैं मेरे, नहीं वो पराये ।

गर्दिश के दिनों में मेरा साथ दे जो
डगमगाए कदम तो हाथ अपना दे जो

मेरी हार पर हौसला जो बढ़ाये,
वो अपने हैं मेरे, नहीं वो पराये ।

जब छाये अँधेरा तो बन जाए उजियारा,
डूबे मेरी कश्ती तो बन जाए किनारा ।

मिटाने अँधेरा जो दीपक जलाए,
वो अपने हैं मेरे नहीं वो पराये ।

फूल खिले हैं रेगिस्तान में

फूल खिले हैं रेगिस्तान में
मैं गर्दिश में शोक मनाऊँ कैसे ?
खो बैठे हैं जो सुख की आस
उन लोगों को समझाऊँ कैसे ?

साँझ के बाद होता है सवेरा
बेघर खग को मिलता है बसेरा।
संघर्ष कर और बढ़ आगे
फिर देख भाग्य जागेगा तेरा।

आती है बहार पतझर के बाद
यह बात उन्हें सिखलाऊँ कैसे ?
खो बैठे है जो सुख की आस
उन लोगों को समझाऊँ कैसे ?

यूँ हार मानना ठीक नहीं
डरकर यूँ भागना ठीक नहीं ॥
तेरी होगी जीत बस कर्म कर
हथियार डालना ठीक नहीं।

मत हो निराश

मत हो निराश, फिर भर ले आस
तू कसम की भाँति खिलता जा।

अब ना तू डर, चल छोड़ फिकर
जीवन पथ पर तू चलता जा।

कभी मिली जो हार, फिर हो तैयार
सपने आँखों में बुनता जा।

न अश्रु बहा है तेरा जहाँ
हर दर्द को अपने मसलता जा।

फिर मिलेगी राह हो मन में चाह
यूँ खुद को ना तू छलता जा।

आ गा ले गीत, ओ मेरे मीत
नयी राहों पर तू संभलता जा।

नववर्ष

नवकुसुम खिले, नवदीप जले
नव हर्ष प्यार के रीत तले ।
अंतर्मन का करके श्रृंगार
नववर्ष पर सब मिले गले ।

जो बीत गया उसे जाएँ भूल
काँटों को छोड़ महकाएँ फूल ।
जीत तुझे भी मिलेगी राही
हार को पहले कर कबूल ।

चेहरे पर सबके मुसकान रहे
चाहे हो प्रभात या साँझ ढले ।
अंतर्मन का करके श्रृंगार
नववर्ष पर सब मिले गले ।

आओ करें संकल्प सभी
आने वाला कल सुनहरा हो ।
वेदना का साम्राज्य नहीं
बस खुशियों का पहरा हो ।

थाम एक दूजे का हाथ
चलो हम सभी साथ चलें ॥
अंतर्मन का करके श्रृंगार
नववर्ष पर सब मिले गले ।

कमज़ोर नहीं है नारी

कमज़ोर नहीं है तू नारी
खड्ग तुम्हें उठाना होगा,
अपनी रक्षा की खातिर नारी
तुम्हें खुद ही आगे आना होगा।

कितने अत्याचार सहे
तूने अपने इस जीवन में,
चुनर ओढ़ मर्यादा की
ख्वाब छिपा लिए मन में।

कमज़ोरी और लाचारी को
शब्द कोश से हटाना होगा,
अपनी रक्षा की खातिर नारी
तुम्हें खुद ही आगे आना होगा।

कर संकल्प तू आगे से
अब ना सहेगी अत्याचार,
आँख उठाकर देखे कोई
रणचंडी बन कर दे वार।

फूल समझकर नोच रहे जो
बन अंगार जलाना होगा,
अपनी रक्षा की खातिर नारी
तुझे खुद ही आगे आना होगा।

अब नहीं बनना है सीता
नहीं द्रौपदी तुझे बनना है,
बन जा तू लक्ष्मीबाई
अधिकार के लिए लड़ना है ।

तोड़ बंधनों की बेड़ियाँ
विकराल रूप दिखाना होगा,
अपनी रक्षा की खातिर नारी
तुझे खुद ही आगे आना होगा ॥

लो झूम के सावन आ गया

बरखा की ऋतु आ गई, काली घटा फिर छा गई,
व्याकुल मन मेरा बौरा गया, लो झूम के सावन आ गया ।

उपवन में, खलिहानों में, सूने पड़े मैदानों में,
बरस रही अमृत की धार, बूँदों का मिला उपहार ।

मन को मेरे बहला गया
लो झूम के सावन आ गया ।

गोरी की उड़ गई चुनरिया, सिर से गिर गई भरी गगरिया,
रिमझिम बरसे जल की धार अमृत की हो रही बौछार ।

चहुँओर नशा फिर छा गया
लो झूम के सावन आ गया ।

शीतल पवन है बह रही, दिल से मेरे कुछ कह रही,
होते प्रीतम जो मेरे पास, काहे ये मन होता उदास ।

सोये अरमान जगा गया
लो झूम के सावन आ गया ।

सपने

बनते हैं सपने, बिखरते हैं सपने
आशाओं के रंग में रंगते हैं सपने ।

आँखों को देकर जीने की चाहत
दिल में हमारे सँवरते हैं सपने ।

कभी फूल बनकर महकते हैं सपने
कभी चाँद बनकर चमकते हैं सपने ।

अगर टूट जाएँ तो इन्हीं आँखों से
बादल बनकर बरसते हैं सपने ।

पल में ये बनते हैं, पल में बिखरते हैं
रंग ये कितने बदलते हैं सपने ।

किया है उसने बहुत कमाल

बनाया ये जहान सारा
दिया दरिया को किनारा ।
सबके दु:ख में बनकर ढाल
किया है उसने बहुत कमाल ।

सुबह सूरज बनकर निकले
रात में चाँद बनकर चमके ।
रखता है वो सबका ख्याल
किया है उसने बहुत कमाल ।

चाहे दूर हो उसका डेरा
सभी के दिल में है बसेरा ।
कोई न समझे उसकी चाल
किया है उसने बहुत कमाल ।

कभी बन जाए घटा वो काली
और कभी पेड़ों की हरियाली ।
बिछाया कैसा सुंदर जाल
किया है उसने बहुत कमाल ।

दिया फूलों को रंग प्यारा
चमकाया गगन में सितारा ।
सारी सृष्टि को रखा संभाल
किया है उसने बहुत कमाल ।।

वो जादूगर है निराला
खोल दे किस्मत का ताला ।
रचना है उसकी बेमिसाल
किया है उसने बहुत कमाल ।

पापा

नहीं माँगूगी गुड़िया मैं पापा
ऊँगली पकड़ के चला दो ना।
मन करता है फिर से मेरा
पहले जैसा घुमा दो ना।

चलो चले उस मेले में
जहाँ पहले हम जाते थे।
भैया और दीदी के संग
तब कितनी मौज उड़ाते थे।

नुक्कड़ वाले भैया से
बर्फ के गोले खाते थे।
सर्दी का जब मौसम आए
मिलकर अलाव जलाते थे।

बुझी हुई उस अलाव को
फिर से आप जला दो ना
मन करता है फिर से मेरा
पहले जैसा घुमा दो ना।

अलाव

बर्फ से ठंडे हो रहे रिश्ते
चलो स्नेह का अलाव जलाएँ।
जो अपने हमसे दूर हो गए
आओ उन्हें हम करीब लाएँ।

जीवन के ताने बाने को
आओ प्यार से रंग दें हम।
सुख-दुःख अपना बाँटे तो
हर दर्द हो जाएगा कम।

हमने वादा किया है जिससे
चलो फिर से उसे निभाएँ।
जो अपने हमसे दूर हो गए
आओ उन्हें हम करीब लाएँ।

स्नेह का अलाव जलाकर,
इर्द-गिर्द बैठे हम सारे।
अहम को अपने जाएँ भूल,
बने एक दूजे के प्यारे।

द्वेष भाव के जमे मैल को
दिल से अपने दूर हटायें।
जो अपने हमसे दूर हो गए
आओ उन्हें हम करीब लाएँ।

मन मेरा बौरा गया

बहने लगी मदमस्त हवा
नशा इस तरह छा गया,
शीतल बयार छू कर गई और
मन मेरा बौरा गया ।

ओस की बूँदे गिरी फूलों पर
कली ने ली अंगड़ाई है ।
छाया प्रकृति में रंग-उमंग
फागुन की ऋतु आई है ।

मतवाला प्यारा यह मौसम
मन को मेरे भा गया,
शीतल बयार छू कर गई और
मन मेरा बौरा गया ।

निर्झर की निर्मल धारा
वेगवती हो बहती है ।
कितना सुंदर बना दृश्य ये
दिल से मेरे कहती है ।

कुदरत का यह रूप मनोहर
मन मेरा बहका गया ।
शीतल बयार छू कर गई और
मन मेरा बौरा गया ।

मेरे पंख

आँख गड़ाए नीलगगन में
सोचा करती थी बचपन में,
कितनी खुशकिस्मत है चिड़िया
कितनी प्यारी उसकी दुनिया ।

पंख फैलाकर उड़ती है
अपनी मस्ती में रहती है ।
काश मुझे भी पर लग जाते
मेरे सपने सच हो जाते ।

फिर वो बचपन बीत गया
अब सपनों का था रंग नया ।
कुछ बनने का, कुछ करने का
जीवन में आगे बढ़ने का ।

लेकिन अचानक एक दिन
भाग्य ने खेला ऐसा दाँव,
सहसा गिर पड़ी जमीन पर
आहत हो गए मेरे पाँव ।

घायल होकर बिस्तर पर
मैं कई दिनों तक पड़ी रही ।
आह, जाने कितनी वेदना
मैंने बस चुपचाप सही ।

धीरे-धीरे स्वस्थ हुई और
चलने लगी पैरों पर अपने ।
जाने क्यों अहसास हुआ कि
सच हो गए बचपन के सपने ।

खुश हो गई अपने सपनों को
नये ढंग में मैं पाकर ।
अब धरती है मेरा नीलगगन
ये पैर ही तो है मेरे पर ।

फूल की आत्मकथा

एक बाग में मेरा जन्म हुआ
कली से मैं सुंदर फूल बना ।

जहाँ मंद पवन के झोंके थे
खुशियों में हिलोरे लेते थे ।

एक माली ने मुझे देखा
ले तोड़ मुझे मंदिर को चला ।

अपने हाथों को बढ़ा दिया
प्रभु के चरणों में चढ़ा दिया ।

मैं स्वयं पर बहुत इतराता था
न गर्व से फूला समाता था ।

पर जैसे -जैसे शाम ढली
किस्मत ने भी करवट बदली ।

कोमल शरीर मुरझा गया
लो अंत समय अब आ गया ।

संसार का क्या यही नियम है
इंसान भी कितना निर्मम है ।

जब सुंदर था तब पास रखा
अब मुरझाया तो फेंक दिया ।

किसान की कहानी

एक तरफ़ है बाढ़ का पानी
दूजी ओर बिटिया सयानी ।
फ़सल है डूबी, मडई टूटी
है किसान की यही कहानी ।

कभी बाढ़ ने डाला डेरा
कभी अकाल ने उनको घेरा ।
जब कर्जा सिर पर चढ़कर बोला
तब बरसे झरमर बरखा रानी ।

बाढ़ में बछिया बह गई
गाय अकेली रह गई ।
पत्नी ने सिर पीट लिया
बैलों की रह गई निशानी ।

बिटिया का भी ब्याह पास है
रहता चेहरा उसका उदास है ।
कैसे करेंगे पूरा बाबूजी
दुल्हेराजा की मनमानी ।

बदल गया मेरा गाँव

दृश्य-एक

कभी फ़सल जहाँ लहराती थी, ठंडी हवाएँ आती थी ।
पंछी भी कलरव करते थे, नीड़ों में चैन से रहते थे ।

फूलों पर तितली मँडराती थी और गीत अमन का गाती थी ।
पनघट पर प्यारी जाती थी, भरकर वह गगरी लाती थी ।

जब काले मेघ बरसते थे मिट्टी की खुशबू आती थी ।
वो सौंधी महक मेरे मन में एक नई उमंग जगाती थी ।

दृश्य-२

अब नहीं फ़सल की हरियाली, नहीं है फूलों की वह डाली
सावन के झूले खो गये, पनघट भी सूने हो गये ।

अब गर्म हवाएँ चलती हैं, चिमनियाँ जहर उगलती हैं,
आमों की बगिया थी जहाँ कल, बन गये मकानों के जंगल ।

बदलते वक्त के साथ -साथ सब कुछ देखो बदल गया,
कभी बसता था यहाँ मेरा गाँव, अब बन गया है शहर नया ॥

एक दशहरा ऐसा भी

बुराई के अंधकार को मन से दूर भगाएँ,
एक दशहरा ऐसा चलो मिलकर हम मनाएँ ।

क्रोध और अहंकार का रावण मन में समाया
प्यार और उदारता, की सीता को कितना सताया ।

मर्यादा और धीरज के राम को वापिस लाएँ
एक दशहरा ऐसा चलो मिलकर हम मनाएँ ।

अज्ञान के अंधकार को मिटाना ही होगा
उर में अपने एक प्रेमदीप जलाना ही होगा ।

मोह -माया के जाल से खुद को हम बचाएँ
एक दशहरा ऐसा चलो मिलकर हम मनाएँ ।

जो कुटिल भावना है मन में उसे नाश करें
अपने अच्छे कर्मों पर विश्वास करें ।

इस पावन पर्व पर हम स्वयं पर विजय पाएँ ।
एक दशहरा ऐसा चलो मिलकर हम मनाएँ ।

क्षमा और मानवता का धारण करें अलंकार
हिंसा और असत्य का डाल दें हथियार ।

आओ सद्‌गुणों से अपने इस धरती को सजाएँ ।
एक दशहरा ऐसा चलो मिलकर हम मनाएँ ।

मौसम नहीं मल्हार का है

ऋतु है यह शीतलहर की
पल ये पर्व - त्योहार का है,
हट जा तू, ए काले मेघा
मौसम नहीं मल्हार का है ।

कारी बदरी भटक गई है
जल बरसाकर चहक रही है,
जहाँ चमकती ओस की बूँदें
सौंधी मिट्टी वहाँ महक रही है ।

फ़सल लहराने का मौसम है
समय नहीं बौछार का है,
हट जा तू ए काले मेघा
मौसम नहीं मल्हार का है ।

तनिक बताना मुझे तू पावस
किसने निमंत्रण तुझे दिया,
अपने घर जल्दी लौट जा मेघा
माँ ने तुझको याद किया ।

शोकमग्न बैठा किसान है
समय तो हर्ष बहार का है,
हट जा तू, ए काले मेघा
मौसम नहीं मल्हार का है ।

आईना झूठ नहीं बोलता है

सुर भी गलत हो, न ताल बन रहा हो
फिर भी गीतों पर आपके कोई डोलता है,
तब देखना दर्पण एक बार साफ़ करके
वो आईना है यारों नहीं झूठ बोलता है ।

श्रृंगार छिपा देगा तन मलीनता को
विचार बता देंगे मन की शालीनता को,
वह मित्र सबसे अच्छा जो दो टूक बोलता है
वो आईना है यारों नहीं झूठ बोलता है ।

सत्कर्म का प्रकाश जीवन -पथ पर जलता
उदार भाव ही सदा मन में जिसके पलता,
औरों की खातिर जो उर के द्वार खोलता है
वो आईना है यारों नहीं झूठ बोलता है ।

एक अनोखी दीपावली

दीपों की सुंदर अवली से दीया एक उठाएँ
किसी अँधियारे घर में उसे चुपके से रख आएँ,
अश्रुपूर्ण नयनों में हम हर्ष के आँसू लाएँ
एक अनोखी दीपावली मिलकर चलो मनाएँ।

गूँज रहा हो पटाखों से जब नीला आकाश
बैठा हो जब कोई नन्हा होकर बहुत उदास,
फुलझड़ियों की चंद रोशनी चलो उसे दे आएँ
एक अनोखी दीपावली मिलकर चलो मनाएँ।

महक उठा हो पकवानों से जब घर-आँगन
क्षुधा तृप्ति की खातिर जब कोई फैलाये दामन,
अपने हिस्से के भोजन से उसकी भूख मिटाएँ
एक अनोखी दीपावली मिलकर चलो मनाएँ।

जाति -धर्म के नाम पर फैले नहीं द्वेष का भाव
दु:ख की तपती धूप यदि हो तो बन जाए छाँव,
खुशियों का फैले उजियारा चलो ऐसा दीप जलाएँ
एक अनोखी दीपावली मिलकर चलो मनाएँ।

किताबें

गुज़रे हुए किस्से गुनगुनाती हैं किताबें
हर दिन कुछ नया सिखाती हैं किताबें ।

एक घर,एक पेड़,एक गुजरती राह
सब कुछ याद दिलाती हैं किताबें ।

वो नदियाँ, वो परियाँ, वो गीतों की लड़ियाँ
हर पल मन बहलाती हैं किताबें ।

किताबों की दुनिया होती है प्यारी
हर दर्द हमारा भुलाती हैं किताबें ।

इसके शब्द -शब्द में बसी है प्रेरणा
ज्ञान का सागर कहलाती हैं किताबें ।

चलने लगी हवा पागल

थाम के मेघों का आँचल
चलने लगी हवा पागल ।

बागों में, मैदानों में,
खेतों में, खलिहानों में,

बरसी बूँदें, मची हलचल,
चलने लगी हवा पागल ।

फसल लगी ऐसे लहराने,
जैसे पवन को गले लगाने,

उमड़ रहे काले बादल,
चलने लगी हवा पागल ।

गोरी की भीगी चुनरिया,
सिर से गिर गई भरी गगरिया ।

नाचे मयूर, बजी पायल,
चलने लगी हवा पागल ।

सीमाएँ कुछ कहती हैं

सीमाएँ कुछ कहती हैं,
अपनी देह पर गिरने वाले
बम और गोलियों की आवाज़ को,
बरसों से चुपचाप सहती हैं,
ज़रा सुनो,
सीमाएँ कुछ कहती हैं ।

वे कहती हैं,हम तो धरा हैं
जिसपर लहलहाता था, धान, गेहूँ, सरसों
उड़ती थी सतरंगी चुनरिया
लहलहाता था किसान का मन
पर अब फटती हैं सुरंगे
और रक्त की नदियाँ बहती हैं,
ज़रा सुनो,
सीमाएँ कुछ कहती हैं ।

कोई नहीं सुनता है इसे
सभी मगन है इसे अपना बनाने में
अरे ! इन्हें क्या मालूम
इस निर्जीव धरा में
एक आहत आत्मा रहती है
कोई तो सुनो, सीमाएँ कुछ कहती हैं ।

लाल फूल

वो लाल रंग के फूल,
अब भी याद आते हैं।
न कोई महक थी उनमें
न थी कोई चमक, फिर जाने क्यों
मेरे मन को लुभाते हैं,
वो लाल रंग के फूल
अब भी याद आते हैं।

नहीं मिलेंगे किसी बाग में
न दिखेंगे किसी गमले में लगे पौधों में।
माँ के हाथों के जादू से
खिलते थे सोमवार से
शनिवार तक ही।
चेहरे पर रौनक लाते हैं,
वो लाल रंग के फूल
अब भी याद आते हैं।

चोटी बनाकर माँ लाल रिबन बांधती थी
फिर सुंदर से फूल का
आकार देती थी।
बचपन की सैर कराते हैं,
वो लाल रंग के फूल
अब भी याद आते हैं।

मेहंदी और महावर

घर में एक रौनक सी आ जाती है,
माँ जब मेंहदी और महावर लगाती है।

चूड़ियों से भरी उनकी कलाई,
बचपन में मैं गिना करती थी,

उनकी बड़ी लाल - हरी बिंदी
निकाल खुद लगा लिया करती थी,

किसी पर्व के आने की सूचना दे जाती है,
माँ जब भी मेंहदी और महावर लगाती है।

माँ के जैसा ही बनना चाहती हूँ
उनकी ही तरह सँवरना चाहती हूँ।

उनके चेहरे पर बनी रहे सदा,
वो मुस्कान बिखेरना चाहती हूँ।

मकान को मंदिर - सा पवित्र बनाती है,
माँ जब भी मेंहदी और महावर लगाती है।

स्वीकार है हिंदी

भारत की एकता का
आधार है हिंदी ।
आओ कहें हम गर्व से
स्वीकार है हिंदी ।

हिंदी है माँ के जैसी
जिस पर बिंदी लगी है,
राजभाषा के
बिरुद से सजी है ।

मेरी मन की भावनाओं का
तार है हिंदी,
आओ कहें हम गर्व से
स्वीकार है हिंदी ।

आजादी के दीवानों की
भाषा रही हिंदी,
हम सब को जोड़ने की
आशा रही हिंदी ।

मान है, ईमान है
और प्यार है हिंदी
आओ कहें हम गर्व से
स्वीकार है हिंदी ।

मेरा सौ-सौ बार प्रणाम है

देश की रक्षा की खातिर
जो देते अपनी जान हैं
ऐसे वीर सपूतों को मेरा
सौ-सौ बार प्रणाम है ।

घनी वादियाँ, ऊँचे पर्वत
बर्फीली चट्टाने हो,
आह नहीं भरते हैं कभी वो
उनकी यही पहचान है,
ऐसे वीर सपूतों को मेरा
सौ-सौ बार प्रणाम है ।

दुश्मन चाहे हो बलशाली
उसको मुँह की खानी है ।
देते हैं अंजाम सिरफिरे
जो भी मन में ठानी है ।

अपना परचम लहराता रहे
उनका यही अरमान है ।
ऐसे वीर सपूतों को मेरा
सौ-सौ बार प्रणाम है ।

रणभूमि में डट जाएँ तो
अपनी परवाह नहीं करते हैं।
प्राण न्योछावर करते हैं
संग कितनों को ले मरते हैं।

उनके मजबूत इरादों से
देश की आन और शान है।
ऐसे वीर सपूतों को मेरा
सौ-सौ बार प्रणाम है।

बचपन की यादें

हो गयी आज मुलाकात मेरी फूलों से,
सौंधी मिट्टी से और सावन के झूलों से ।

लो याद आ गई मुझे मेरे बचपन की
चलो बतिया लें फिर पनघट से, चूल्हों से ।

वो क्या दिन थे और कितनी प्यारी रातें थी,
दिन में तितली थी, रात जुगनुओं की बातें थीं ।

वो अठखेलियाँ, नादानियाँ फिर मिल जाए,
चलो कहीं दूर चलें झूठे इन उसूलों से ।

मिट्टी के तन को आज मिट्टी में सनने दो,
वो बीते हुए ख्वाबों को फिर से बुनने दो ।

जो आज सीखा हमने खैर कोई बात नहीं,
बहुत कुछ सीखा है बचपन की भूलों से ।

हो गई आज मुलाकात मेरी फूलों से,
सौंधी मिट्टी से और सावन के झूलों से ।

हार्दिक स्वागत है

जिन्हें क्षितिज तक जाना है
जीवन में कुछ कर दिखाना है,

जिन्हें सपनों को सजाना है
एक नई राह बनाना है,

जिन्हें सत्य के मार्ग पर चलना है
कठिनाइयों में भी आगे बढना है,

जो ज्ञान के सागर में डूबना चाहते हैं
बनाकर नई पहचान उभरना चाहते हैं,

संघर्ष की दुनिया में उनका
हार्दिक स्वागत है ।

स्त्री

स्त्री
कोई चाबी वाला
खिलौना नहीं,
कि जिसने चाबी भर दी
उसी के आगे नाचने लगे ।
वह मिट्टी का बना
चूल्हा भी नहीं,
कि सारी उम्र जलकर
दूसरों के लिए
पकती रहे ।
वह तो संवेदना है
भावना है,
श्रद्धा है, विश्वास है
घर में किसी देवी के
होने का एहसास है ।

अरमान

वे ख्वाहिशें नहीं रखते
महँगे कपड़ों की या ऊँचे महलों की
वे नहीं सोचते
दिन अच्छे हैं या बुरे ।
फ़र्क नहीं पड़ता है उन्हें
जी लेते हैं वे ।
बस यही उम्मीद रखते हैं
कि उनके ठेले पर रखा सामान
शाम होने तक बिक जाए
और लौटते वक्त
अपने बच्चों के छोटे-छोटे अरमानों को
अपनी हथेली में सजाकर घर ले जायें ।

भोर की बेला

इस भोर की सुंदर बेला में
मेरा चंचल-सा मन डोल रहा ।

धीरे -धीरे, हौले- हौले,
दिल से जाने क्या बोल रहा ।

सूरज की सुनहरी किरणों में
सतरंगी परों को खोल रहा ।

धरती पर गिरी हिम बिंदु में
रस सपनों के वह घोल रहा ।

उठते पलकों के परदों में,
दो आशाओं को तोल रहा ।

आम इंसान

मुझे नहीं आता
सभ्य बनने का ढोंग।
मैं सच को झूठ
और झूठ को सच करने के
पैंतरे भी नहीं जानता।
बनावटी चेहरे से टपकने वाली
झूठी भावनाओं से भी
बिल्कुल अंजान हूँ।
शायद इसलिए
आज मैं
हासिये पर धकेला गया
आम इंसान हूँ।

दूसरा घर

उसने अपने लडखडाते हाथों से
चश्मे पर लगी धूल साफ की,
धीरे से छडी उठाई,
पत्नी की तस्वीर पर चढ़ी
फूलों की मुरझाई माला
थैले में रखी ।
अपने हाथों से सजाये घर को
आँखों में भरकर
निकल पड़ा,
वहाँ,जहाँ उसकी तरह कई लोग
अपनों के आने का
इंतजार कर रहे थे ।
उसने फिर मुड़कर कभी नहीं देखा
बस चलता गया,चलता गया ।

हम उम्र से बड़े हो गए ।

रिश्ते और लिहाज के ताने बाने में
कुछ इसतरह गुँथ गए,
कि लोग कहने लगे हम
उम्र से बड़े हो गए ।

ज़िम्मेदारियों को पलकों पर उठाने लगे
काँच सी नाजुक डोर को
चटकने से बचाने लगे ।

जाने कितने ही दर्द को
हँस-हँस के सह गए,
और लोग कहने लगे
हम उम्र से बड़े हो गए ।

तुम हवा हो

तुम रात में निकलने वाला चाँद नहीं,
जो सूरज के उगने पर
अदृश्य हो जाये ।
तुम दिन में चमकने वाला
सूरज भी नहीं,
जो साँझ होने पर अस्त हो जाये ।
तुम रात को टिमटिमाने वाला
तारा भी नहीं
जो स्वयं प्रकाशित होने पर भी
दूसरों पर आश्रित रहे ।
मैं जानती हूँ तुम क्या हो?
एक हवा का झोंका ।
हाँ,तुम हवा ही हो
जो वक्त के साथ
स्वयं को बदलना जानती है ।
तुम सुबह बहने वाला
शीतल मंद समीर हो
और भयंकर चक्रवात भी ।
तुमने समाज के रंग ढंग
पहचान लिए हैं ।
समय के साथ तुमने भी
अपना रंग बदलना सीख लिया है ।
तुम अब चाँद,सूरज या तारा नहीं
तुम निरंतर बहने वाली हवा हो ।

इंतजार

माँ, जब भी तुम हाथों में मेंहदी लगाती
मैं समझ जाती
कल ज़रूर कोई व्रत या पूजा होगी ।
तुम जब भी बाज़ार जाती
मैं तुम्हारे आने का इंतज़ार करती ।
तुम जब लौटती
मैं थैली में मिठाई या फल ढूँढती ।
तुम जब भी घर साफ़ करती
एक -एक चीज़ पर पड़ी
धूल को झाड़कर दिव्य कर देती ।
समय जाने कब रेत
की तरह फिसलता गया
मैं ब्याहकर दूसरे घर आ गई ।
अब हर तीज -त्योहार पर माँ
मेरे आने का इंतजार करती है ।

नकाब

खुशियों का नकाब लगाना
उसे खूब आता है।

हर दर्द को हँसी में बदलना
वह खूब जानती है,
जिंदगी के हर मोड़ को
अच्छी तरह पहचानती है।

ज़िम्मेदारियों से उसका
सदियों पुराना नाता है,
इसलिए
खुशियों का नकाब लगाना
उसे खूब आता है।

सभी के मनपसन्द व्यंजन
हथेलियों में उसके समाये हैं,
हर परिस्थिति में उसने
सारे फर्ज़ निभाये हैं।

अपने जब रूठते हैं तो
उसका जी घबराता है,

क्योंकि
खुशियों का नकाब लगाना
उसे खूब आता है।
वह कठपुतली नहीं
लेकिन सभी के हाथों में है उसकी डोर
जब जिसे हो ज़रूरत
खींचता है उसे अपनी ओर।

क्या जाना है किसी ने
उसके मन को क्या भाता है ?
फिर भी
खुशियों का नकाब लगाना
उसे खूब आता है।

बेटी के विदा होने के बाद

माँ का रोते - रोते
हो गया है बुरा हाल,
बेटी के विदा होने के बाद ।

पिता बाहर से हैं स्वस्थ
लेकिन अंदर से हैं
बिलकुल निढाल,
बेटी के विदा होने के बाद ।

कुछ खास बाराती
शेष बचे हैं और कर रहे हैं निरीक्षण ।
दहेज में दिए गए सामान का
उनका भी अभी
रखना है खयाल,
बेटी के विदा होने के बाद ।

माँ के इर्द गिर्द बैठी औरतें
समझा रही हैं
बड़ी फिलोसफी के साथ
कि हर बेटी को एक दिन
जाना है ससुराल,
बेटी के विदा होने के बाद ।

शामियाने वाला बुला रहा है
बार - बार रसोइया,बिजली वाला
और न जाने कौन - कौन
सभी कर रहे हैं बेसब्री से
पिता का इंतजार,
बेटी के विदा होने के बाद ।
कर्ज़ ली गई रकम का
लगा रहा है हिसाब
और हर गरीब बाप
बड़ी खुशी से
हो रहा है हलाल,
बेटी के विदा होने के बाद ।
ये बेटियाँ,बेटियाँ नहीं होती
मानो सामान होती हैं,
जिसका सौदा करके
हर लड़के वाले
हो जाते हैं खुशहाल,
बेटी के विदा होने के बाद ।

केंचुल

आओ
हम सब मिलकर
केंचुल उतार दें
उनकी
जो इंसान के रूप में
बैठे हैं हमारे बीच
और हमें
साँप बनाकर
टोकरी में
बंद कर देना
चाहते हैं।

अगरबत्ती बनाती लडकियाँ

बड़ी ही मेहनती
बड़ी ही समझदार होती हैं
अगरबत्ती बनाती लडकियाँ।
अपने टूटते - बिखरते घर का
आधार होती हैं
अगरबत्ती बनाती लडकियाँ।
मटमैले कपड़े, काले हाथ
और पसीने से तरबतर
फिर भी
बहुत ही पवित्र और खुशबूदार होती हैं
अगरबत्ती बनाती लडकियाँ।
होती हैं वे अपाहिज पिता की लाठी
अपने छोटे -छोटे भाई-बहन के
सपनों को आँखों में बसाकर
दिन-रात अगरबत्ती की तरह
जलती रहती हैं।
शायद इसलिए
स्वयं किसी देवी का
साकार होती हैं
अगरबत्ती बनाती लड़कियों।

वे लोग

(सच्ची घटना पर आधारित)

दिन दहाड़े एक लड़की को
जला देते हैं वे लोग।
कौन जाने किस दुनिया से
आते हैं वे लोग।
क्या उनकी नहीं होती हैं
बहन और बेटियाँ
क्यों किसी के दिल के टुकडे को
जलाते हैं वे लोग।
ये तो यकीन है कि
ज़ालिम और बेरहम हैं,
फिर किस तरह इंसान
कहलाते हैं वे लोग।
लूट कर खुशियाँ किसी की
मुस्कुरा लेते हैं,
एक माँ का नूर छीनकर
घर सजा लेते हैं वे लोग।

अटूट विश्वास

उसी विश्वास के साथ
बढ़ाया है कदम मैंने
जिस विश्वास के साथ
पंछी उड़ जाता है सवेरे
दाने की तलाश में।
मुझे भी उड़ना है
तय करनी है ज़मीं से
आसमाँ तक की दूरी
पाना चाहती हूँ
उस पंछी की तरह
अटूट विश्वास।
बस इतना ही चाहती हूँ
मेरे बढ़ते कदम को
मिलता रहे हौसला
मेरे सपनों के सच होने का
चलता रहे सिलसिला।
सफल न हो पाऊँ
तो कोई दुःख न हो
लेकिन सार्थक बनाने का प्रयास
कभी कम न हो।

हो सके तो मुझे याद दिलाना

जब घर गृहस्थी के काम में
कभी व्यस्त हो जाऊँ,
थककर बिस्तर पर
भूखी ही सो जाऊँ,
तब प्यार से हल्की सी
चपत मुझे लगाना,
हो सके तो मुझे याद दिलाना ।
जब घर के सभी सदस्यों के
पीछे भागना पड़े,
जब देर रात तक
कभी मुझे जागना पड़े,
और आँख खुले नहीं
सुबह पाँच बजे के अलार्म पर
हो जाए देर फिर भी
प्यार से जगाना,
हो सके तो मुझे याद दिलाना ।
जब कभी कोई गलती
मुझसे हो जाए,
आते - जाते घर में
ताने कोई मुझे सुनाए,
तब बैठाकर अपने पास
प्यार से समझाना,
हो सके तो मुझे याद दिलाना ।

मौन

मेरी अनकही बातें
अक्सर मुस्कुरा देती हैं
मेरी कही बातों पर,
उसे पता है
यहाँ समझने वाला
कौन है ?
कुछ कहने से
बेहतर तो
हमारा मौन है ।

❁

उडान

मैं परकटा पक्षी
ऊँची उडान की ख्वाहिश
रखता हूँ।
आँखों से ही ज़मीन से
आसमान की दूरी नापता हूँ,
और हकीकत जानने पर
फिर धरती पर
आ गिरता हूँ।
मैं परकटा पक्षी
अपने एक पंख से,
गगन में उड़ने की
कोशिश करता हूँ।
हर बार असफल होने के बावजूद,
मैं हारता नहीं
और न ही मरता हूँ।

संघर्ष

फूल हो गए हैं निढाल
पत्तों पर,
कुछ डाली से टूटकर
बिखरे हैं।
कुछ पानी से भीगकर
बेजान पड़े हैं
और कुछ अब भी
डाली से जुड़े रहने का
साहस कर रहे हैं।
बारिश की बूँदें बड़ी तेज थी
इसलिए खिले हुए फूल
संघर्ष करते -करते
पत्तों पर सो गए
और कुछ
इनसे लड़ने के लिए,
अपने पैरों पर
फिर खड़े हो गए।

प्यासी धरती

यह देखो
फिर काले बादलों ने
आकाश को ढक लिया ।
गरज तो ऐसे रहे हैं कि
अभी झमाझम बरस पड़ेंगे ।
लेकिन
हम जानते हैं,
ये तो हमें बस
छलने के लिए आए हैं ।
दो -चार बूँदें गिरा देने से
धरती हरी नहीं हो जाती ।
यह जो उमड़ -घुमड़ कर
बड़े शान से आ रहे हैं
अभी देखना
बिना बरसे ही लौट जाएँगे
और धरती
प्यासी की प्यासी
रह जायेगी ।

मैं परी

मैं परी
सुंदर सफ़ेद चमकीले
कपड़े पहने खड़ी हूँ,
किसी शानदार जलसे की
पहली नुमाईस बनकर।
मैं परी
रेशमी कपड़ों से
सुंदर फूलों से सजे
दरवाज़े के किनारे
खड़ी कर दी गई हूँ।
हर अंदर जाने वाले को देखकर
मुसकुराती हूँ, अदब से।
मैं परी
चंद रुपयों के लिए
खड़ी रहती हूँ,
है जादू की छड़ी मेरे पास
लेकिन अपनी ही किस्मत
नहीं बदल पाती।

मैं परी
जलसा ख़त्म हो जाने पर
उतर जाते हैं
बदन से सुंदर कपड़े
और चिथरे हाल
हो जाती हूँ
मैं परी ।

❧

तेरे आँचल के साये में

जो तुम मुझे आने देती
तो मैं तुम्हारे ही
आँगन में खेलती
पापा के लाये हुए
घुँघरूवाले पाजेब पहनकर
नाचती कूदती, उछलती
भैया के सताने पर
तुम्हारे आँचल में छिप जाती
और खूब रोती,
तुम चोकलेट देकर मुझे मनाती
और भैया को डाँट लगाती ।
इसी तरह दिन पर दिन
साल पर साल
गुज़र जाता ।
तेरे आँगन को छोड़कर
मैं अपने दूसरे घर चली जाती ।
हम दोनों की आँखे
आँसुओं से भरी होती ।
लेकिन यह सब नहीं हो पाया माँ,
काश, तुम मुझे आने देती
तो इस शीशे की बोतल के अंदर से
तुम्हें तलाशने के बदले
मैं तेरी आँचल के साये में होती ।

मेरे मन की चिड़िया

मेरे मन के आँगन में
एक चिड़िया रोज चहचहाती थी
फुदक -फुदक कर कोई मीठा गीत
रोज गुनगुनाती थी।

सदा खुश रहती थी
अल्हड़-सी, वो सुंदर चिड़िया
अपने जीवन को
जी भरकर जीती थी।

बहुत ऊँची नहीं थी उसकी उडान
फिर भी पा लिया था
उसने सारा आसमान।

पर जाने क्यों
अब मेरे मन के आँगन में
वो आती नहीं,
खुशी के गीत गुनगुनाती नहीं।

क्या कहीं बैठी होगी
होकर उदास ?
या अधूरी रह गई है
उसकी कोई आस।

या फिर किसी से रूठ गई है
या अंदर ही अंदर टूट गई है ।
सूना है उसके बिना
मेरे मन का आँगन ।

कभी आती भी है तो
अब फुदकती नहीं
पहले जैसा चहकती नहीं ।

खुश देखने के लिए
करती हूँ लाख जतन ।

उम्मीद लगाये बैठी हूँ
कभी तो वह चहचहायेगी
मेरे मन के सूने आँगन में
फिर खुशहाली आयेगी ।

युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है

आह, वेदना, दर्द और विनाश का पर्याय है
किसी भी प्रश्न का नहीं ये उपाय है ।

इसके अंजाम से कोई अंजान नहीं है
युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है ।

काले-डरावने अंबर से मौत बरसती है
मानव जाति का ये सर्वनाश ही करती है ।

क्षत-विक्षत शव का लगा हआ अंबार है
हरतरफ बस लहू की नदियाँ ही बहती है ।

क्यों देखकर यह सब कुछ कोई हैरान नहीं है
युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है ।

जब जलती हैं बस्तियाँ तब कैसे कोई सो पाता है
मानव ही मानव का देखो कैसे खून बहाता है ।

शहर और गाँवों की रौनक पल भर में खो जाती है
प्रेम और अहिंसा का अस्तित्व ही मिट जाता है ।

बैर और नफ़रत की यहाँ कोई पहचान नहीं है
युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है ।

परिचय

नाम:: बंदना पंचाल

पिता: श्री संतप्रसाद शर्मा

माता: श्रीमती माधुरी शर्मा

पति: स्व. कमलेश पंचाल

जन्म तिथि: 23 जून, 1982, अहमदाबाद

शिक्षा : एम. ए (हिंदी), उर्दू सर्टिफिकेट कोर्स (गुजरात विश्वविद्यालय)बी. एड, यूजीसी नेट

सांप्रत: हिंदी शिक्षिका, डिवाइन चाइल्ड इंटरनेशनल स्कूल गांधीनगर, गुजरात

प्रकाशित रचनाएं: साहित्य समर्पण साझा काव्य संकलन में प्रकाशित रचनाएँ, नवल सखी संग्रह साझा काव्य संकलन में प्रकाशित रचनाएँ, नवरंग सखी साझा काव्य संग्रह में प्रकाशित कुछ रचनाएँ, कई राष्ट्रीय पत्रिका और समाचार पत्र में रचनाएँ प्रकाशित

संपर्क: 10/3, मंगलम फ्लैट, आनंद फ्लैट के सामने, बापूनगर, अहमदाबाद - 380024

ईमेल: panchalbandanadcis@gmail.com

दूरभाष: 7016658542